

लीची लगाने के लिए उन्नत किस्म

गरिमा दीवान¹, नारायण लाल² एवं ए.के. वर्मा³

¹इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर

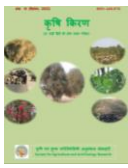
²भाकृअनुप-भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान, भोपाल (मध्य प्रदेश)

³भाकृअनुप-केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर (राजस्थान)

लीची उपोष्ण जलवायु का एक सदाबहार वृक्ष है जो कि एक विशेष जलवायु में ही अच्छी उपज देता है इसीलिए विश्व के कुछ ही देशों में इसकी व्यवसायिक रूप से खेती की जाती है। इसकी खेती चीन, थाइलैंड, ताइवान, वियतनाम, भारत व अन्य देशों में की जाती है। इसके फल अपने मनमोहक सुगंध, आकर्षक रंग एवं पौष्टिक गुणों के लिए जाने जाते हैं। भारत में इसकी खेती उत्तर-पूर्वी राज्यों बिहार, त्रिपुरा, असम, पश्चिम बंगाल, झारखंड, पंजाब, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में की जाती है। भारत वर्ष में देश का सर्वोत्कृष्ट लीची फलों का उत्पादन उत्तर बिहार में होता है। लोकप्रियता के आधार पर इस रंगीली, रसभरी लीची को 'फलों की रानी' कहा जाता है। इसकी उत्पत्ति चीन से हुई हो जो कि लीची का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। भारत उत्पादन के मामले में दूसरे नम्बर पर है। भारत में गुणवत्तायुक्त उत्पादन व उत्पादकता के कारण इसकी घरेलू व अंतराष्ट्रीय बाजार में अच्छी मांग है। विशिष्ट जलवायु पसंद होने के कारण इसकी खेती देश के कुछ ही राज्यों में की जाती है। देश में बिहार लीची उत्पादन में सबसे अग्रणी

है। भारत वर्ष में लीची सबसे पहले त्रिपुरा में पकती है जहां पर इसके फलों की तुड़ाई मध्य मई में की जाती है। इसके बाद असम, पश्चिम बंगाल तथा बिहार में लीची पकती है। बिहार में लीची के फल 20 मई से पकना आरंभ करके 10 जून तक मिलते हैं जैसे-जैसे पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ते हैं लीची के फल देर से पकते हैं।

भारत में लीची फल चीन से आया है। इसका आनुवांशिक गुण बहुत ही संकीर्ण है जिससे किस्मों में ज्यादा विविधता देखने को नहीं मिलती है और किस्मों की विकास गति बहुत धीमी है। संकरण के द्वारा आनुवांशिक गुण को बढ़ाया जा सकता है परन्तु इस प्रकार से बहुत कम सफलता मिलती है। अतः लीची के आनुवांशिक सुधार के लिए क्लोनल सेलेक्शन ही सबसे अच्छा पाया गया है। भारत में लीची की औसतन उत्पादकता 07 टन है जबकि चीन में इसकी औसत उत्पादकता 14 टन है। भारत में लीची की मांग बढ़ती ही जा रही है जिससे इसका क्षेत्र केरल, कर्नाटक, तमिलनाडू व मध्य प्रदेश आदि राज्यों में बढ़ रहा है लेकिन बिहार में इसका क्षेत्रफल सीमित ही है। भारत में लीची के उत्पादकता

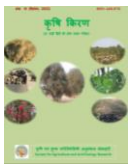


को और भी बढ़ाया जा सकता है, क्योंकि लीची में अधिक उत्पादन देने की क्षमता है। उन्नत किस्मों का उपयोग किसी भी फसल की खेती में अधिक आमदनी के लिए प्रमुख स्थान रखता है। उन्नत किस्मों का उपयोग करके किसानों की आय को बढ़ाया जा सकता है। इसीलिए भारत सरकार के कृषि मंत्रालय के द्वारा राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र की स्थापना मुजफ्फरपुर, बिहार में 2006 में की गई और यह संस्थान केवल लीची के अनुसंधान व विकास पर काम कर रहा है। अनेक तकनीकों के विकास के साथ-साथ नई किस्मों और उपलब्ध किस्मों को एकत्र करके उसका मूल्यांकन कर रहा है। लीची के किस्मों में उपलब्ध गुणों के आधार व उनमें सुधार करके विष्टि उद्देश्य के अनुरूप नई उन्नत किस्मों का विकास कर रहा है ताकि किसानों को किसी भी प्रतिकूल वातावरण में अधिक से अधिक उत्पादन मिले और उनकी आय बढ़ सके। किस्मों का चुनाव करते समय विभिन्न गुणों वाली किस्मों को लगाना चाहिए ताकि विपरीत परिस्थिति में भी अच्छा उत्पादन मिल सके।

- अच्छी वजन वाली किस्में: ऐसे किस्मों का चयन किया जाना चाहिए जिसमें फलों का वजन 25 ग्रा. से अधिक हो जैसे-कस्बा और बेदाना। बड़े आकार के फलों का मूल्य भी अधिक होता है और प्रतिवृक्ष उत्पादन भी अधिक मिलता है जिससे किसानों को अधिक आय प्राप्त

होती है। यहाँ तक की असम में प्रति लीची की कीमत दस रुपये तक होती है।

- जल्दी व एक साथ परिपक्व होने वाले किस्म: जब कभी भी कोई फसल बाजार में सबसे पहले आती है तो उसकी मांग अधिक होती है और किसानों को अच्छी आमदनी हाती है क्योंकि उपज का मूल्य अधिक मिलता है। साथ ही साथ एक वृक्ष के सभी फल एक साथ पकने वाले होने चाहिए जैसे-ग्रीन, देहराज व शाही जल्दी व एक साथ परिपक्व होने वाली किस्में हैं।
- अधिक गूदे व छोटी बीज वाली किस्में: लीची में केवल फल का गूदा ही खाने के लिए उपयोग किया जाता है और गूदे का ही उपयोग जूस- कैन लीची, स्क्वाश इत्यादि बनाने में किया जाता है जिससे इस प्रकार के किस्मों की मांग उद्योगों में ज्यादा होती है। अधिक गूदे व कम बीज वाले किस्मों जैसे बेदाना, लेट बेदाना, बेदाना सेलेक्शन पंत, अली बेदाना, सबौर बेदाना, गण्डकी योगिता, स्वर्णरूपा की मांग अधिक होने से किसानों को अधिक आमदनी प्राप्त हो सकती है। बीज के छोटे होने के कारण गूदे की अधिक मात्रा को खाने व विभिन्न उत्पाद बनाने में किया जा सकता है। किस्मों में बीज का वजन कुल फल वजन के 15 प्रतिशत से कम हो तो अच्छी मानी जाती है।



- आकर्षण रंगों वाली किस्में: लीची अपने लाल रंग के लिए प्रसिद्ध है। फल जितना चटकीला लाल रंग का होता है उतनी ही अच्छी उसकी कीमत भी मिलती है और उसकी मांग उतनी ही ज्यादा होती है। फीकी रंग वाले फलों की मांग नहीं होती है जिससे किसानों को कम कीमत पर ऐसे फलों को बेचना पड़ता है। अच्छे लाल रंग के फलों को अधिक कीमत पर बड़े-बड़े शहरों में बेचा जा सकता है। कस्बा, चाईना, पुरबी, शाही, गण्डकी लालिमा, रोज सेन्टेड, आदि अपने चमकीले लाल रंग के लिए प्रसिद्ध है जो कि किसानों को अधिक लाभ प्रदान करने में मदद करते हैं।
- नियमित फल देने वाले किस्में: लीची में एकांतर फलन की समस्या देखी गयी है जिनमें एक वर्ष तो अच्छा उत्पादन होता है लेकिन दूसरे वर्ष बहुत कम व न के बराबर उत्पादन होता है। इससे किसानों को एक वर्ष तो आमदनी होती है परन्तु दूसरे वर्ष आमदनी नहीं हो पाती है। ऐसे किस्मों का चयन किया जाना चाहिए जो कि प्रतिवर्ष उत्पादन देती हैं जैसे- शाही, ग्रीन, रोज सेन्टेड, देहरारोज, त्रिकोलिया इत्यादि।
- प्रतिरोधक क्षमता वाली किस्में: लीची में फल जलन व फटन एक प्रमुख समस्या है जिससे किसानों को अधिक नुकसान उठाना पड़ता है। लीची ग्रीष्म ऋतु मई-

जून में पकती है और इसी समय वातावरण में तापमान अधिक व नमी कम होने के कारण लीची में छिलके जलने लगते हैं और जैसे-जैसे छिलके के ऊपर जलन का क्षेत्र बढ़ता जाता है लीची फटने लगती है। कभी-कभी तो 80-90 प्रतिशत फल जल व फट जाते हैं। ऐसे क्षेत्रों में जहां पर इस प्रकार की समस्या हो वहां पर ऐसी किस्मों का चयन किया जाना चाहिए जो जलन व फटन विरोधी हो। जलन व फटन विरोधी किस्में जैसे- चाईना, कस्बा, बेदाना, मंदराजी, पूर्वी, स्वर्णरूपा इत्यादि को लगाना चाहिए जिससे किसानों को अच्छी गुणवत्ता वाली लीची प्राप्त हो और किसानों की आमदनी बढ़ सके।

- लीची में फलो का झड़ना एक सामान्य बात है परन्तु जब जरूरत से ज्यादा लीची फल झड़ने लगते हैं तब यह एक समस्या हो जाती है और किसानों को कम उपज प्राप्त होती है। फलों के झड़ने के अनेक कारण हो सकते हैं जिसमें वातावरणीय कारक प्रमुख होता है। ऐसे किस्मों का विकास किया जाना चाहिए जिसमें फल झड़न की समस्या ज्यादा ना हो। मुख्यतः पकने के समय झड़ने वाले फलों से किसानों को ज्यादा नुकसान होता है और इस प्रकार के फलों का झड़ना मुख्य रूप से बीज व फल बेधक कीट व एबसिसिक अम्ल की वजह से



होता है। इस प्रकार के झड़न को रोकने के लिए बीज व फल बेधक विरोधी किस्में किसानों की आय को बढ़ाने में अधिक उपयोगी हो सकती है।

- रोग व कीट-व्याधि रोधी किस्में: वैसे लीची में तो कोई गंभीर बीमारी खेतों में नहीं देखी गयी है परन्तु लीची माइट व बीज व फल बेधक एक प्रमुख समस्या है। लीची माइट के कारण पुष्पक्रम में फल नहीं बन पाते हैं और बीज व फल बेधक कीट सीधे फल के डंठल के पास गूदे को खाकर नुकसान पहुँचाता है और

इस प्रकार के फलों को न तो खाने वाले खरीदते हैं और न ही कोई व्यापारी। इस कीट की वजह से कभी-कभी किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ जाता है। ऐसे किस्मों का विकास जरूरी है जिनमें कम या उस कीट का प्रभाव न पड़ता हो जैसे कस्बा। जिससे किसानों को अच्छी गुणवत्ता वाली फल मिले और किसानों की आय बढ़ सके। क्योंकि कीट रोधी किस्मों के कारण कीट के नियंत्रण करने में लगने वाला खर्च भी बच जाता है और किसानों की लागत भी कम हो जाती है।